अणवाँच्या ग्राँखर

•

रचयिता :
रघुराजसिंह हाडा

•

प्रथम संस्करण
१९७०

•

मूल्य—दो रुपये पचास पैसे

•

प्रकाशक :
ग्रर्चना प्रकाशन
१, मेहरा हाउस, कालाबाग
अजमेर (राजस्थान)

मुद्रक :
प्रिण्ट हाउस,
बाबू मोहल्ला,
ग्रजमेर

अरपण !

वां सव्याण ईं जे धरती 'र आसः
का अणवांच्या आंखर बांच'
अर पसीना सूं—
अणलिख्या आंखर
लिखऽ

—रघुराज

म्हूं

चड़ीचुप हो जाऊं छूं। मैं नें तो ये गीत घणा गाया। थां नें सुण्या
अर सराया भी। अब थां गावो। थां ईं रुच्या तो म्हूं
जाणूंगो क' माता शारदा ईं जे पूजा का पुसब में नें
चढाया छा वां में साँची सोरम छी। अगर न'
रुच'तो मैं ईं माता सूं बिनती करबा
द्यो क' आग' अस्यो लिखूं
जस्यो थां ईं रुचऽ।

घणां दना सूं या हूंस मन छी क' बोली का बोल कोरा सुणबा
काई न' गुणबा का भी लाग', बांचबा का भी लाग, समझबा
सोचबा जस्या भी लाग'। म्हूं या न' कह सकूं क' ये ही
व' आंखर छ' जे घणबांच्या छा, अर बांचबा जोग ही
छऽ। पण बोल्यां कगाल कोई न', ये बोल भलांई
तोतला होव', आंखर भलांई टूट्या फूट्या
होवऽ। हाड़ोती-बोली की माटी सूं या
बात थां पसां ईं पढ 'र गल' उतर
सक' तो म्हारो बड़ो भाग छऽ !

प्रकाशकीय निवेदन

हाड़ौती बोली है। बोली में सुर के आरोह अवरोह से अर्थ में बड़ा परिवर्तन हो जाता है। जैसा बोला जाता है वैसा लिखना बड़ा कठिन है। फिर भी लेखक ने कुछ स्वर-चिह्न लगाकर बोली के सही उच्चारण को लिपिबद्ध करने की चेष्टा की है। उन स्वर-चिह्नों को यथावत् रख कर हमने प्रकाशकीय दायित्व निभाया है। फिर भी उच्चारण में त्रुटि दिखाई दे तो सुझाव आमंत्रित है। अगले संस्करण में उन पर विचार किया जा सकेगा।

पाठ में, दो स्वर-चिह्न प्रयुक्त हुए है—अवग्रह (ऽ) और ऊर्ध्वविराम (')। अवग्रह, वाक्य के अन्तिम अक्षर के प्रलम्बित या स्वरित हो जाने का सूचक है यथा—

पूरब आडी गैल छऽ।

ऊर्ध्वविराम अक्षर के पहले आने पर अक्षर-लोप का सूचक है और पीछे प्रयुक्त होने पर अक्षर के प्रलम्बित या स्वरित हो जाने का। उदाहरण देखकर समझ लेने पर आगे चतुष्पदियों का सही पाठ करके अर्थाधिगम करने में कठिनाई नहीं होगी।

(१) खाल=चमडी
खाल'=खाले

(२) बता'र=बता कर
बतार'=बतारे !

(३) आवतो=थकाया
आव'तो=आवे तो

अनुक्रमणिका

अणबाँच्या आँखर

उडता पखेरू मांड' आंगर गगन पऽ
गूंगोघण प' कोई बांच' न बोल' रे ॥
मानो देवे रे मीण' घूंघट कळियाँ
आंधो मनक, कोई हाँसे न हाल' रे ॥ गूंगो....

पीड़ा हेलो देव' कोई बात न बूझ' रे
प्रीत की बराबरी पळक नहिं पूँछ' रे,
दमना जे दीस' व' पराया सबका ही रे,
देळ बिसवास' धणी द्वार न खोल' रे ॥ गूंगो....

अणमीच्यो वन में केगूलो मुळकाव' रे,
हाथां सहळातां भी लज्याळू कुमळाव' रे,
काईं की उमंग ऊं क' ईं क' दुख काईं को,
कोई न' नबज यहाँ कोई की टटोळ' रे ॥ गूंगो....

पतझड़ कद आयो अर कद चलग्यो,
आमो कद मोर आयो अर कद फळग्यो,
अब क' वसन्त में कदेक बोली कोयळ,
कुण विरहण हाय ! बैठी न हिंडोळ' रे ॥ गूंगो....

बायरा गाव' छ र क' नशास ढाळ' छऽ
सूरज बाळ' छ र क' जगत उजाळ' छऽ
नाच' छ ये झरणां क भटक' छ' दर दर,
न्हाव' तो छ' यां में कोई मन झकोळ' रे ॥ गूंगो....

अपणो ही सुर में अपणो गीत गावणो,
अपणी ही रामकथा मनक सुणावणो,
बोझ तो ऊमर को ढोय' छ' सारी दुनियां,
हेत को कळश वोह्यां मर मर ढोळ' रे ।। गूंगी ...

उड़ता पखेरू मोड' ओसर गगन प:
गूंगी धरा प' कोई बांच' न बोल' रे
झालो दे झीण' झीण' घूंघट कळियां,
आंधो मलक कोई हांस' न हाल' र ।। गूंगी....

गीत

सूरज' मेंहदी मानणी, हिंगळू वी हाँस' रेख,
धोवट वर झगमगार टेव प' सूनो मायो टेक,
जागो मिरगा नैणी — वोनो कोयल - वैणी
काँई मी सूना सझ्या ढाळना ?

वीरा उबा वारण' कर पूछ' ये मनव्हार
"कदू दमनी म्हारी जामण जाई चंचळ बहण अवार
घर की सूनचड़ी ए—कोमल फूलछड़ी ए—
कुम्हळा मत रूपक घर की डाळ का—
काँई मी सूता सझ्या ढाळना ?"

भाइल्याँ हेलो दे वोली—"घूमर घाला चाल,
मत रूस' म्हारी मीठी मेणा' परणाँ देंगा काल,
लाड़ो लंगड़ो आव,' हासो क्यूं नें' आवऽ
क्यूं नैणां झर झर मोती राळता—
काँई मी सूता सझ्या' ढाळता ?"

मायो चूम कलेज' चं'टा मायड वोली—"जाग,
धुल मत ये म्हारी फूलांराणी ! थोडी चाळ' लाग,
वणज मनख्यां का होर्‌यो—तोल म्हाई जे होतो,
कळिया को झूमको का पाळता—
काँई भी सूता संझ्या ढाळता ?"

' मन गाढो कर बैठो !"—बाबुल बोल्या भर भर आंग,
"ब'ठी बांध गरीबी थारा सासरिया का पाग,
म्हैं हो गहणें' गल जाऊं—कोई में तो बक जाऊं—
धन होतो तो क्यूं गोदी गाळता—
कांई मी गूता संम्या ढाळता ?"

बुझती बार मचोळो खाय' ज्यूं दीपक की बात,
अधजागी अधसूती गोरल गोल्या दोन्यूं हाथ—
मेंहदी मंगळ डोरो—हिंगळू काजळ कोरो,
टीको सुहाग को उजाळता—
कांई मीं सूता संझ्या ढाळता ?

"दुखड़ा फेरा लाग्या र' बाबुल ! आंसू भरग्या हींगळू,
अब तोरण की चिन्ता छोड़ो परणी अम्बर बीद सूं,
कजा की डोळी आगी—बीदणी आफू लागी,
डाइजा ऊमर भर जो बाळता—
ई लेख' सूता संझ्या ढाळता।"

"बेकळ मन, ऊजळ तन छोड्यो बाबुल ! थांको बाग,
घुट घुट बेसळग्यां ही बझगी या ऊमर की आग,
आसा हारी थाकी—कुल मरजादा राखी,
तोरण प' थां की पाग उछाळता।
ई डर सूं सूता संझ्या ढाळता ॥"

धरती सूं

पसीना का बीजां सूं झोळी ए भर दी ।
तू तो एक का सहँस कर द' री धरती ।।

दश 'र दड़ूकल्या मेट्या ए म्हां न' खाळ,
दहेंग्यां को जमारो आयो काट्या जद जाळ,
व'ळा की हिम्मत बिन को नं' सरती ।। तू तो.....

ऊँची ऊँची डूंगर्यां सूरज मळक'
र साम' हळ, धोळ्यां की सीगोट्यां पळक'
ए ऊमरां न ऊमर हरी ए करदी ।। तू तो.....

वाग' जद वायरा 'र सर सर हाल'
रे डेगड़' गोफण हाळी गोरज्या रुखाळ'
रे चारस्यां की लारां कलकारा करती ।। तू तो.....

वादळा 'र बीजळा धड़ूका देती धार,
मोर्यां को कोकाट रे पपैया की पुकार,
बीच बीच गीतां की झरण झरती ।। तू तो....

म्हांकी महनत माता धरती को दान,
मोतीड़ा सूं भर जावे पेळा पेळा पान,
मरदां न कावू तकदीरां करली ।।
तू तो एक का सहँस कर द' री धरती ।।

गीत

रात कर' रखवाळी—काट' परभात रऽ
चदा क' खेत खड़ी तारों की शाख रऽ ।।

बादळ में' रंग ढुळ' जळ छाव' रूप रऽ
सूरज को जीव वळ' धरती ले धूप रऽ
कुण सेजां मांड रही—कुण, को सुहाग रऽ ।
चंदा क' खेत खड़ी तारां की शाख रऽ ।

हीरां की खान खुद' रह जाव' धूळ रऽ
धरती का प्राण पी 'र हांस' छ फूल रऽ
जगभर नें' जोत मल' दीपक नें राख रऽ ।
चंदा क' खेत खड़ी तारां की शाख रऽ ।

मन कुण प' वार दियो तन कुण क' हाथ रऽ
कोई को हर पल नछरोवळ कोई की बस रात रऽ
हथळेव' चेक दियो मेंहदी को दाग रऽ ।
रात कर' रखवाळी—काट परभात रऽ
चंदा क' खेत खड़ी तारां की शाख रऽ ।

कबूतराँ को जोड़ो

डागळी क' छाज' कबूतरां को जोडो,
म्हं निरखण लागी कबूतरां को जोडो ॥

अतनी सी वात माँ न' बाबुल सूं जा' कही,
बाबुल न' हाथ पेळा' करवा की साधी,
धुटल' पलाण वीरा उगणी दिशा ली,
म्हार' मर धूमट्यो मळक गई भाभी ।
गूटरगूं वोल्यो कबूतरां को जोडो । र' डागळी क' छाजऽ…

घणां राजी वीरा वावड़ घर आया,
सातूं सहेल्यां मिल मंगल गाया,
भाभी ब'ठाण म्हार' सीगसा कराया,
डोढ्यां शहणाई नगारा गरणाया ।
गूटरगूं वोल्यो कबूतरां को जोडो । र' डागळी क' छाजऽ…

वीरा लाया सोनां रूपां का ये गहणां,
वेसड़ला सीव' काक्यां व'ठी ए अगणां,
छूट्या हे राम लाडी फूल्यां का रमणां,
कांचली का बूंत लिया भाभी न' कसणां ।
गूटरगूं वोल्यो कबूतरां को जोडो । र' डागळी क' छाजऽ…

सावली उतार म्हं ई पडळो पहरायो,
हाथां म गजदन्ती चुडलो खंचायो,

[illegible]
म्यागग्या म मांग भरार' हिवड़ू भरायो।
गूटरगूं बोल्यो कबूतरां को जोड़ो। र' डागळी क' छाज

काचा पाका बांगां को मेंडो जे रोप्यां,
गावुम को द्वार पेला तोरण गूं ओप्यो,
हिवड़ा न मान म्हारो हथळेवो गोप्यो,
प'ना को यो पुत म्हारो परमेसर होग्यो।
गूटरगूं बोल्यो कबूतरां को जोड़ो!
र डागळी क' छाज' कबूतरां को जोड़ो!
म्हूं निरखण लागी कबूतरां को जोड़ो!
गजब कोई होग्यो कबूतरां को जोड़ो!!

गीत

मारा आंसू पीग्यो ऊमर को रेतीलो तीर रे,
तो भी नही धुपी यादां की या धूंधळी लकीर रे ।।

उघडी मिली म्हैंन' पगथळियां गेला प' चोराया पऽ
हाल घडी उठ चल्या अस्या सैनाण मिल्या हर छाया पऽ
आसा का मृगजळ क' पाछ' भटके मन की पीर रे ।। या…

कदी नही आया म्हारे आंगण तो तुलसी पूजवा,
सपनां क' द्वार' भी आतां व' पग लाग' धूजवा,
नं' मदिर में' मिल' न मूंडा सू बोल' तसवीर रे ।। या…

कद की बोई बेल चमेली हाल न आया फूल रे,
कद का म्हारी पून्यूं ऊपर रह्या बादळा भूल रे.
कद सूं सिमट्यो साम्यो मन को पडियो पचरग चीर रे ।। या…

तात' तव' बूंद ज्यूं टमक' ये गीतां रा बोल रे,
दो जुग बड़ी कहाणी बणगी वहूं न तो भी खोल रे,
कसक' तो भी काढ न पाऊँ यो दो धार्यो तीर रे ।।
सारा आसू पीग्यो ऊमर को रेतीलो तीर रे,
तो भी नही धुपी यादा की या धूंधली लकीर रे ।।

तू अर म्हूँ

थारी नींदी आंख म्हारी छाती को उठाण,
रूप को डळो तू म्हार' जूम बेपरमाण ।।

म्हारा हाथाँ धरती प' मोती चमकऽ
थार' री कळेज' प्रीत गंगा अमगऽ
तू छ' गोरा पारवती, शम्भू करशाण ।। रूप को ...

लू ये शेळी राताँ, झड़ झेल्या म्हूँन' माथ,
आँसूड़ा पी करी थैं नँ' दूधाँ बरसात,
थार म्हार' हाथ करया की बड़ी आण ।। रूप को ...

छोटी सी छपारी म्हार' धरती की सेज,
थार' गोरी घूँघटा मं' सतियां को तेज,
मनखपणाँ की काया म्हूँ ए री तू प्राण ।। रूप को ...

घाट्याँ, बन, टाट्याँ में लगादयो म्हूँ नं' बाग,
साँस थारी गंध लाई, रंग लायो राग,
दोनूँ हाथाँ दान कराँ, सुख का खलाण ।। रूप को ...

थारी नींदी आंख म्हारी छाती को उठाण,
रूप को डळो तू म्हार' जूम बेपरमाण ।।

गीत

वैरी मत खा र' काळचड़ा खेतां की ज्यार,
बाबुल को खेत म्हारा मन को शणगार। वैरी ...

झोळ्यां पसार म्हैंनं' मेघो बुलायो,
थाक्योड़ा बळदां सूं मर मर हंकायो,
पूजा ले धरती न' हरियो उगायो,
अब छाती प' खेता का कड़ता को भार। वैरी ...

दमनी पडजाव'गी होळी दिवाळी,
घूमर मं' गा गा न वाज'गी ताळी,
गं'ण' मलज्यागी गोरी की खुगाळी,
अर फीका पडजाव'गा तीजां का थ्वार। वैरी ...

रखड़ी की रह ज्यागी फेरूं जडाई,
रक ज्यागी चुडला की चूंपा चढाई,
फर ज्यागो फेर म्हारा लगनां को नाई,
कही बाबुल तजदे म्हारा व्याव को वच्चार। वैरी

सूनी सूनी लाग'ये शेळी रातां,
मुणवाई तरस' मन कोई की वातां,
भालो नी दे पास्यूं मेंहदी रे हाथां,
म्हारी अणबांधी रह जासी वंदणवार। वैरी ...

भाइल्यां परणागी, जा पहरया रमझोल,
भाम्यां 'र अ'स फेरूं मार'गी बोल,
मत छेड़' देस म्हारा गोफण को टोळ,
म्हार' काना में गूँज रही जान की झणकार। वैरी ...

महलां जा मोत्यां का चुग्गा मल'गा,
लछमी का झाड़ चुगे ज्यूं ज्यूं, फळ'गा,
झोपड़ियां क' आंगण' आंसू ढळ'गा,
अरे मत खावे काजळ अर हीगलू प' खार ।।
वैरी मत खा रे काळचड़ा खेतां की ज्यार ।

आंसू अर गुलाब

आँसू मत ढाळ री गुलाब की कळी !
आखी ऊमर थँ न' जी की हँसी राखी ए,
जी नें थँई हिवड़ा रे ऐड़'-छेड़' राखी ए,
अमी सोरम फैला-ऊं' को जस उजळे
महक उठे रे आखा गाँव की गळी ।। आंसू मत····

थारो रुखाळो थँ न' गयो नही छोड़ रे
नेहरू न' तन धार्‌या पैंताळीस क्रोड रे
एक दिवला न' असी जोत उजाळी ए
हर हिवडा म' वा ही मूरती ढळी ।। आसू मत····

ऊँचा गगन सूँ तिरंगो बतळाव' रे
धजा लहराव' ऊँ में' नेहरू मुळकाव रे
तन को कफन तो कफन छो ए बावळी
चन्दण—चिता प' चढी हेम की डळी ।। आँसू मत····

चमनी सूँ धूधाड़ो उठे रे धन-धंधा को,
मंदिर मस्जिद पड्‌यो नाम नदी-बँधा को,
नहरां में' लहरातो आवे ऊँ को सपनो
सूनो निपजावेगो रे रेत की थळी ।। आँसू मत····

खेता करसाण का पसीना में' ऊ भांक' रे,
मोट्‌यारां में' नेहरू का आसा-पळ पाक रे,

कलकारी मार खेले टावर टोळी ए
काका नेहरू की ले 'र असीस या पळी ।। आँसू मत

उठ' वरबूळ्या तो फिकर मत करजे,
लुआँ बळबळती वाजे तो मत डरजे,
अमर वसन्त नेहरू करसी रुखाळी ए
पतझड़ होवे चाव्हे छळी' रे वळी ।। आँसू मत

सीमा को सिपाही बण हरदम जागे रे
नेहरू का ललाट–सो हिंवाळो अब लागे रे
कच्छ कश्मीर सूँ कुमारी–अन्तरीप ताँई,
नेहरू की भसम कण कण में' घुळी ।।
आँसू मत ढाळ री गुलाब की कळी ।।

ग़ज़ल

(१)

थाँ न' आया तो या पून्यूँ की रात सूनी छः
जस्याँ तो बीन्द क' बिना बरात सूनी छः।

सोऊँ तो सेज चुभे जागूँ तो नेणां भारी,
था बिना बात करूँ तो वा बात सूनी छः।

यूँ तो व' फूल हँस्या, वायरा न थळ खायो,
मारूं भँवरा बिना फुलवात-पाँत सूनी छः।

ऊंच' चढ मोर करे मेहो मेहो मेघा मूँ,
तसायी प्रीत फिरे तो बरसात सूनी छः।

म्हारी मेडी म' उगे चाँद जदी म्हूं जागूँ,
लाख तारां भरी नभ की परात सूनी छः। थाँ न' आया—

(२)

जाणतां बीणतां विस्वास करयां भूल करी
व' तो य' ही छा म्हूं ही भूल गयो भूल करी।

य' तो हँस्या छा म्हारा हाल प' बेफिकरी मूं
म्हांन' भुट्याई भरम पाळ लियो, भूल करी।

मुजरो

आई रणबंका मुजरो करनी मायड़ नाजे रे-
मायड़ नाजे-रणबंका एकड़का बाजे रे ।

ीवर बनियाँ बींगती-कीवर गूंथूं हार,
धव' फूल उठावतां ज्यूं जळना अगार ।।
हटीला मायड़ नाजे रे ।

ाजळ रातो पट गयो-नैण न देवे सैण,
कीकर गाऊं कलायणी मुग वळवळता बैण । केसरिया मायड़....

पायल ल्यूं व' परतळी-मन म' माची होड,
मायड़ री पलका झरी-पायल दीनी तोड़ । बादीला मायड़

कीकर नाचूं आंगणे-टोढ्यां लागी आग,
रण बणग्यो सबको धरम-की चूंदड़ की पा'ग ! पातळिया मायड़ .

कुण को कोख अभागणी, फीको स्वाग सिंदूर-
कुण की राखी अणमणी, बाबल घोळा धूळ ! आलीजा मायड़ ...

अबर कांपे तोप सू-धरती वीर प्रयाण
घायल म्हारा सूरमा-झेले रति का बाण । छबीला मायड़ ...

बखतर पहरयां म्हू खड़ी मुजरो करती बार,
चूड़ी सांटे सौपद्यो तिरियां ई तलवार ।। अलबेला मायड़....

कामण कर करपाण ले-कमधजिया ले फूल,
लाछण लागे दूध प'-लाज्यां मर' ध्' धूळ ।।धणी म्हारा मायड़ ..

मुजरो

आई रणवेळा मुजरो करतां मायड़ लाजे रे-
मायड़ लाजे-रणवंका एकड़का वाजे रे।

कीकर कलियाँ वींरातो-कींकर गूंथूं हार,
धक' फूल उठावतां ज्यूं जळता अगार ॥
हठीला मायड़ लाजे रे।

काजळ रातो पड़ गयो-नैण न देवे सैण,
कीकर गाऊँ कलायणी मुख बळबळता बैण। केसरिया मायड़....

पायल ल्यूं क' परतळी-मन मं' माची होड,
मायड़ री पलका भरी-पायल दीनी तोड। वादीला मायड

कीकर नाचूं आंगणे-डोढ्यां लागी आग,
रण वणग्यो सबको धरम-की चूदड़ की पा'ग ! पातळिया मायड. .

कुण की कोख अभागणी, फीको स्वाग सिंदूर-
कुण की राखी अणमणी, वावल घोळा धूळ ! आलीजा मायड़ ...

अवर कांपे तोप सूं-घरती वीर प्रयाण
घायल म्हारा सूरमा-झेले रति का वाण। छबीला मायड....

बखतर पहरयाँ म्हूं खड़ी मुजरो करतां वार,
चूड़ी सांटे सौंपद्यो तिरियां ई तलवार ॥ अलवेला मायड़....

मामण कर करपाण ले-कमधजिया ले फूल,
लाछण लागे दूध प'-लाज्या मर'द' धूळ ॥घणी म्हारा मायड़ ...

फेर कफण माथा पर बांधो
म्यान तोड़ तलवारां थामो
मां को दूध चुकाबा की या बेळा फेर न' आणी रे ।। तलवारां को ···

तन मं' जद तांई सांस रह'गो
एक बूंद भी रक्त रह'गो
जद तांई कणकण मुक्त न व्हेगो
कोई भी आराम न लेगो
भारत को हर नर क्षत्री अब हर नारी क्षत्राणी रे ।। तलवारां को ···

मन मं' कोई हूंस न रहणी
ज्यो कहणी रणखेतां कहणी
मट जाणो दासतां न सहणी
कट जाणो पण धरा न देणी
कायर सौ सौ बार मर' छ' एक बार बळिदानी रे ।। तलवारां को ···

आग अर पाणी

फाकड़ ऊगर वैरी वोले वारूदां री वाणी रे
सुळग' अगनी गेळ' डूंगर जाए' तिड़क' धाणी रे
कमर वांधो परराण चालां तलवारां को पाणी रे ।।

ईं वेरागी को तप टूट्यो
मां की रसड़ी को नग फूट्यो
घूंघट मं' सूं तारो टूट्यो
फेरूं जोहर को सत उठ्यो
र' वांईं फेरूं देणी मूंडां की सैनाणी रे ।। तलवारां को

राणा जी सो हिवड़ो करल्यो
पीथळ सो कंठां सुर भरल्यो
दुद्धा सरखा वेटा देद्यो
भामाशाह ज्यूं सरवस देद्यो
ं की सेजां सोणो पातळ रोटी खाणी रे ।। तलवारां को

खून दियां सूं घाव भर'गो
दान दियां सूं ज्हाज तर'गो
सूनो दयो फौलाद ढळ'गो
हुंकारो संमदर उवळ'गो
तीनो बण चोजावाँ-अतनी नवज वढाणी रे ।। तलवारां को

फेर केशर को टीको काढो
राखी तागो करल्यो गाढो

हेलो

जागो ऐ सांवळी धरती का बेटा ओ।
शेळो डूंगर मांग' ताजा खून ई,
ठंडो बर्फ बुलाव' ताता खून ई ॥ जागो ऐ ...

जी दिन जायो धरती मा न' भारत रो सपूत
हिवाळा को आंचळ पायो गंगा-जमनी दूध;
झांको रे—
धोळो दूध बुलाव' राता खून ई ॥ शेलो ...

बलिदानाँ को पौधो रोप्यो, धरा करी आजाद,
लाखूं बीराँ नं' निपजाया दे प्राणाँ को खाद,
चालो रे—
बलिवेदी न्योतो दे गाता खून ई ॥ शेलो

आजादी की मूरत तोड़' कुण पापी का हाथ
परकोटा का कंगूराँ प' लापर मार' लात,
हुंकारो रे—
पाणी ललकारे जाडा खून ई ॥ शेलो ...

संमदर उफण्यो, पाछी फिरगी सब नंद्या की धार,
मंझ काती म' झबकर चाली सुण मां की पुकार,
उट्ठो रे—
ऊधो शैल तके बळखाता खून ई ॥ शेलो...

राखो मांग' नेग, दूध मांग' मरणो त्यौहार,
चूड़लो हिंगळू बढ बढ माग' जौहर को अंगार,
दौड़ो रे—
आजादी हेलो दे सांचा खून ई ।। शेलो ...

सुर बदलो गीता का भैया बलिदानी रुत आई,
मैंज मिराणा कोयलडी नं' मारू रागां गाई,
वीरा ओ रे—
बपफण रगवाद्यो पाका खून ई ।। शेलो....

कण कण माथा सूं मँहगो छ,' धरती सांटा प्राण,
ऊजड भारत भी राख'गो ई झण्डा को मान,
मागे रे—
मा को खप्पर बैरियां का खून ई ।।

जागो ऐ सांवळी धरती का बेटा ओ,
शेलो डूंगर माग' ताजा खून ई—
ठंडो बर्फ बुलाव' ताता खून ई ।। जागो ए ...

हेलो

जागो ऐ मायड़ी धरती का बेटा ओ।
शेलो डूंगर मांग' ताजा खून ईं,
टंडो धर्म बुलाव' ताजा खून ईं ।। जागो ऐ —

औं दिन जायो धरती मा न' भारत रो सपूत
हिवाळा को आंचळ पायो गंगा-जमनी दूध;
भांको रे—
धोळो दूध बुलाव' राता खून ईं ।। शेलो —

बलिदानां को पौधो रोप्यो, धरा करी आजाद,
लागू वीरां नं' निपजाया दे प्राणां को खाद,
चालो रे—
बलिवेदी न्योतो दे ताता खून ईं ।। शेलो

आजादी की मूरत तोड़' कुण पापी का हाथ
परकोटा का कंगूरां प' लापर मार' लात,
हुंकारो रे—
पाणी ललकारे जाडा खून ईं ।। शेलो ...

समदर उफण्यो, पाछी फिरगी सब नंद्या की धार,
मंभ काती म' भवकर चाली सुण मा की पुकार,
उट्ठो रे—
सूधो शैल तके बळखाता खून ईं ।। शेलो....

राखो मांग' नेग, दूध मांग' मरणो त्योहार,
चुड़लो हिंगळू बड़ बड़ मांग' जौहर को अंगार,
दौड़ो रे—
आजादी हेलो दे सांचा खून ई ।। शेलो...

सुर बदलो गीता का भैया बलिदानी रुत आई,
सैंज मिराणा कोयलडी नं' मारू रागां गाई,
वीरा ओ रे—
बपफणा रणवाद्यो पाका खून ई ।। शेलो....

कण कण मायां सूं मँहगो छ,' धरती सांटा प्राण,
ऊजड भारत भी राख'गो ईं झण्डा को मान,
मागे रे—
मा को खप्पर वैरियां का खून ईं ।।

जागो ऐ सावळो धरती का वेटा ओ,
शेलो डूंगर माग' ताजा खून ई—
ठंडो वर्फ बुलाव' ताता खून ईं ।। जागो ए....

राखो मांग' नेग, दूध मांग' मरणो त्यौहार,
चूड़लो हिंगळू बढ बढ माग' जौहर को अगार,
दौड़ो रे—
आजादी हेलो दे सांचा खून ई ।। शेलो....

सुर बदलो गीता का भैया बलिदानी रुत आई,
सेज सिराणा कोयलड़ी न' मारु रागां गाई,
धीरा ओ रे—
थपफणा रणवाद्यो पाका खून ई ।। शेलो....

कण कण मायां सूं मँहगो छ,' धरती सांटा प्राण,
ऊजड़ भारत भी राख'गो ई झण्डा को मान,
मांगे रे—
मा को खप्पर वैरियां का खून ई ।।

जागो ऐ सांवळी धरती का बेटा आ,
शेलो डूंगर माग' ताजा खून ई—
ठंडो बर्फ बुलाव' ताता खून ई ।। जागो ए....

गीत

बालमा की भायली बन्दूक, म्हारी स्योक
बांक' लारां लारां डोले म्हांसूं ईंगसा करऽ
स्योक बन्दूक म्हां सूं ईंगसा करऽ।

म्हूं तो नूतूं सेज पिया नं', बां नूत' रणखेतां,
अलबेळा को माथो ठणक' गौरी गोड' रहतां
बांक' कांध' बैठी स्योक रणरंगरेळियां करऽ।
म्हां सूं ईंगस

म्हूं पग मांड्यां पाट' बैठो सज सोळा सिणगार,
निरखण लाग्या छैलभंवर म्हारा काजळ की मनव्हार
रण को घूंसो सुण होग्या म्हारी स्योक साथ रऽ।
म्हां सूं ईंगस

म्हारी गोदी धीधो खेल' पी आंचळ को दूध,
स्योक पालण' जमदूतां सा गोळी—अर बारूद
रण का लोभी लाल की अब लाग न करऽ।
म्हां सूं ईंगस

परणी को पिया स्वाग सधाव' टोटो हिंगळू को ही,
पण राच' संगीन स्योक की पी पी ताजा लोही
मद छकिया का नैणां सूं अब आग सी भरऽ।
म्हां सूं ईंगस

म्हारा काल्ह ईं कृ प्यारी सो मुँ गगनहूँ गी तारा,
म्हा कमाई ईं नं जीवन्या कामणगाळा म्हारा,
दो बो जग उजळाजे जी प' दाग न पड़ऽ।

म्हो मूँ ईंगगा....

म्हारो मन मन हेत गजन को जुग जुग का परणेता,
माद निभाजे, म्हा मन मरजे रंग को आंगण नेतो,
दो बी जटो नगाड़ दोट' धारी गोळिया तरऽ।

म्हो मूँ ईंगगा....

म्हारा कंत गायच पारा भी, बेटा धरती मां का,
म्हारा लाग जनम नछरावळ प्रण रहज्या पण बांका,
ऊली न्याग अमर जे धरती कारण' मरऽ।

म्हो मूँ ईंगसा....

•

राखी

राखी रखाण म्हारा वीर !
पीढ़ा का सावण झूम्या रे ऽऽऽ
नैणा छळक' रै खारो नीर, म्हारा वीर !
राखी रखाण म्हारा वीर !

धरा बांधे राखी गून पसीना का मोती दे
गगन मांग' छ' रै जुझारां जगी ज्योती दे
इतिहास मांग' छ' करज केई पीढ़्यां को
राखी-तागो गंगा अर जमना को तीर ।। राखी..

राखी जे बंधाव' तो माया को मोह छोड़ दे,
भुजबध छोड़ दे, कंगण डोरा तोड़ दे,
राखी ललकार छ' रसम कोरी कोई नंऽ
माता म' मिल'गा फेरूं राझा अर हीर ।। राखी....

आजादी आकुळ हो बांधण आई राखी रे
कळाई वढादी ज्यांन' को'स उजळादी रे,
आपणे लेखे तो या तिरंगी धजा राखी छऽ
अरपण प्राणां को यो पचरंग-चीर ।। राखी..

आबरू छ' राखी की खेतां म' खळिहाणां मंऽ
मंदिर, मस्जिद—जस्या कळ कारखानां मंऽ
आंगण तो एकता को संतरी रुखाळ'गा
र' देखो र' पहली मारे जेई मीर ।। राखी....

काळ जे पटे तो मरदानगी ही लाज' रे,
शूरापण मोव' अर बेईमानी गाज'रे,
रगत रगत नही पाणी छ ऊँ रग मेंऽ
जी' क होता टूट जाव," सीमा की लकीर ।। राखी

राखी म' केई का आंसू—केई को सिन्दूर छऽ
धरती की धूळ माँ को दूध भरपूर छऽ
राखी म' सौगध छ' शहीदां का रगत को—
राखी छ' रामेश्वरम्, राखी कशमीर ।।
राखी रखाए म्हारा बीर ।।

विजेदसमी

मूंड' बोलो राम थां क' कांई मन में' रऽ
नकली रावण मर' साल का असली जनम' रऽ।
पंचवटी की लछमण रेखा सालूं साल उलांघऽ
सीताहरण मरण वीरां को, कायर माफी मांगऽ।
आड' फरतां मर' जटायू सूनां वन में' रऽ।
लंका जीत' राम अयोध्या भरत लाल जी लूटऽ,
चोमेरूं मंथरा राज, कोसल्या छाती कूटऽ
सत राणी को, मत राजा को, खाक हवन में रऽ।
सीता न्हाळ वाट मूंदडी बजरंज चट कर जावऽ
भगत कर' हड़ताळ राम जी दे दे ढोक मनावऽ
संजीवण कुण लाव' लछमण तड़प' रण में' रऽ।
चोड़' पाड़' कर' विभीषण लंका सूं गद्दारी
अठी राम सूं रिश्वत खाज्या कंठी-माळा-धारी
उलट्यो थांको राज रामजी नींव गगन में' रऽ।
जुग बीत्यां पण मर्‌यो न रावण बेल बंस की दूणी,
ऊपर सूं मंदोदर राणी दे मिरच्यां की धूंणी,
कुम्भकरण जाग्यो, सोग्यो भगवान भजन में' रऽ।
रावण की लंका सोनां की दन दन चढ' कंगूरा,
कुण तोड़' ? काँई भगत बढ़' तो खींच' टांग लँगूरा
कांकड़ हेलो दे पण अंगद पड्या भवन में' रऽ।
मूंड' बोलो राम.......

चालाँ चम्बल कराड़ँ धण बावँगा

चालाँ चम्बल कराड़ँ धण बावँगा ।
देखाँ म्हाँ गुण नाज बणावँगाँ-ऐ मन गावँगा ।।

म्हाला मइर, धाव ँ धूर धूर,
इतरा हिंगी कुवार-रत नाग पूर,
इन धून आज अन काम काज,
गू नाज गाम को नावँगा ।। चालाँ....

पुरखन म्हाँ रोट-चट्टाना र' फोड़,
ए' पत्थर हीय की जोड़ जोड़,
आपणा अमृत-माता को दूध
दे दे'र बलिदान चुकावँगा ।। चालाँ..........

दोनूँ हाथा उछाळ कदी लेवाँ कुदाळ,
धरती को दलिद्दर देवाँ उखाळ,
दन रात भूम-राजी कर' र भूम,
यूँ मनख जमारो उजलावँगा ।। चालाँ....

जद खोदूँ म्हूं गार, तू भरजे लार,
स' नहर बहादयां आरपार,
कर धरा न' हरी, धन धान भरी,
अब नयो संसार बसावँगा ।। चालाँ..........

दाण' दाण' मोहर लगादी शोषक साहूकार नंऽ
बैलां ज्यूं छीवयां दे रास्या घर भर का करतार नंऽ
यो मळकातो आंगण म्हारा हाथां की कमाई को,
टाबरड़ा की भूखी आंतां धन धनजाई को,
डाल' डाल' उड्ज्यागो र' पागल ज्यूं हरख तो
जीवड़ा को रोतो रोतो चाल'गो चरख तो,
यो तो रुपाळो लछमी को रुपक र' धणावटी,
म्है तो अन्नदाता छूं सलाणां मं' दखावटी,
रीतो डाल, शलाटा र' गवाही यां दो दन का ।।जमावड़ा---

ऐगड़ फोड़या करड़ी छाती हाळा म्हारा धोळ्या नंऽ
कूंता को खाखल खायो भूखां काटी वागोलां मंऽ
छालर गाई ब्यावण आई लेरां ही उठाणं' रऽ
गोबर म्हां कुराळां आल्यां लागी दाणं' दाणं' रऽ
एक बरस पहली म्हां खावां आग' की कमाई रऽ
काया म्हां की, प'लाई कमाई सम्हलाई रऽ
डांडा कोल्हू चौमासो बतादे घणा भारी रऽ
फाटा छ गबूल्या श्याळ' श्याल' धूणी बाली रऽ
पण जिंदा ये रखाण' म्हान' आसा फळ अन्न का ।।

जमावड़ा दो दन का ।।

वीरा

वीरा ओ—जामण जाया वीरा ओ—
वेगो वताजे घर का रूँखड़ा—
ओळूँ आव'गो नित—
ओभाक' आव'गा ये भूँपड़ा ।।

चाली र' घर सूँ गाडी–दूर' देशाँ की आडी—
कसक' र' काळज्यो, वेगा चतारज्यो,
रोव'गी मायड़ली–न्हाळ'गी बाटडली—
बावुल तो पूर'गा र' बसूकड़ा ।। बेगो····

पहलांदा ढोरड़ी जे–पाळी म्हूँ गोरड़ी ए
व्यावण को वळी, लूण्यो मसरी डळी,
म्हूं नं' चखाइजे, बेगो बुलाइजे,
कोड्या सूँ शणगारू ऊँका केरड़ा ।। वेगो····

फूलाँ सी सुगणी भाभी' मोत्याँ रूपाँ की डावी
भोळ्याँ नन्दलाल ले आंगण उजाळ दे
लाऊँ पतासा थाळी, फडूल्या र खुगाळी,
नाई सूँ खनाजे हरिया दूबड़ा ।। वेगो····

वालपण' आमो रोप्यो, वद वद रूँखड़लो होग्यो,
वोल' जद कोयल्याँ, हीद' जद भायल्याँ,

अब क व'शाख मैं, गदराई चाख मंऽ
नुवा र' करवाजे ई का आमड़ा ।। वेगो ..

कडक' जद वीजळ्यां र' आंसू भर' बादळ्यां र
पाँडू को मांडणो ओप' र आँगणो
भीज' न ऊँक प'ली, सूखी होव'र' गेली,
उठवा ही लांग' र जद दूंगड़ा-।। वेगो....

लड़तो रही र' भडतो, जाताँ पगाँ प' पड़ती,
वहण कह्व' ए, नेण वह्व' ए,
पीयर वेट्याँन का, लाडी फूत्याँन का,
घरखूणयाँ हाळा ए जाण' भूँपड़ा ।। वेगा....

हाळी ए हाळी वीरा, गाड़ी चला र' धीराँ,
पूजी छ देळ घर की, नरखूं पर गेल फरती,
कागा उड़ाऊँगी, हिचक्याँ मैं आऊँगी,
कुण जाण' फेर कद आवां याँ गेलड़ाँ ।।
वेगो वताजे घर का रूँखड़ा ।।

वीर की विदा

धरती का लाल जा ए— म्हारो कोल पाळजे
आज विदा की वेळा—आंसू मत ढाळजे ।।

भूल जाजे गोद म्हारी धरा मत भूलजे
हिया का कंवळ ! अब बलिपथ फूलजे
जा रे म्हारा दूध ! जा ए
मत का सपूत ! जा ए
कोख उजाळजे । म्हारो कोल पाळजे ।

राखी की डोर थारे बांधी म्हारा हेत नऽ
आज बुलायो वीरा थं ई रणखेत नऽ
जा रे म्हारा जामण जाया
आंसुवां का नूता आया
राखी सम्हाळजे । म्हारो बोल पाळजे ।

हथळेव' हाथ लियो पांचां क' बीच मऽ
माथा का मोड़, न' भुवजे बैरियां क' बीच मऽ
सेज की उमग जा ए
हिवड़ा का रंग जा ए
रगळी सम्हाळ जे । म्हारो बोल पाळजे ।

बादल बिसाई गई था न', धरती गोद मऽ
थूं भी देतूं' का जे सीसो धरती की गोद मऽ

एक म्हूं मना'र राखो
लाखा की पुकार आगी
ईं न' मत टाळजे। म्हारो कोल पाळजे।

म्हारो रूप दीखे थें में' म्हेंन' तॅलवार दी
म्हारी मरदानगी नं' पाग ले उतार दी,
नैणाँ की आस ! जा ए
कुळ का उजास ! जा ए—
शेर ज्यूं दकालजे। म्हारो कोल पाळजे।

बाळपणाँ पहली पगल्यो धूळा की गळियाँ
महां रमता रेख पांई होटाँ री कळियाँ,
उँठी पग रोपे जठी—
याँ गळियाँ की आण हठी—
पाछो मत चालजे। म्हारो कोल पाळजे।

दे दे पसीनो थें नं' मेहनताँ ईं मानि द्यो
थारी मरदमी न' खेताँ ईं वरदान द्यो
बळदां की टेक ! जा ए—
ऊमरां री रेख ! जा ए
रण ईं रुखाळजे। म्हारो कोल पाळजे।

धरती का लाल जा ए—म्हारो कोल पाळजे—
आज विदा की वेळा—आँसूं मत ढाळ जे ॥

क्यूँ नी आवो ए ?

आंगण नी बाजे बीछ्या ए राम,
सायब जी पूछे-"क्यूं नी आवो ए ?"
कस्यां कहूं मुखड़ा सूं फूटे नी बोल,
चतुर सुजान कोई समझावो ए।
अलबेला पूछे-"क्यू नी आवो ए ?"

तन भारी घूमर हो घाली नी जाए,
आवे सरम गोरी थांरे नी आए,
घूंघटे बैठू तो भोली नणदा लड़े
पणघट जाऊं तो जिठानी अड़े
मन मांगे छाने ही ल्या दीज्यो राम
खाटी कैरी कोई समझावो ए।
मिठबोला पूछे—"क्यू नी आवो ए"

नीमड़ो की डाळ झूले मचवा
अब सूनो आंगण रहे' नी नचवा,
पिया परदेसां हो तो उठे पीर
अब नींद' रहसी बाकी ललदार
अब रहगी होटां पर हालरो ए राम
भूली रग गान, कोई समझावो ए।
मदछकिया पूछे—"क्यू नी आवो ए"

वारे आवेगो सुण अकडंक्यो ढोल,
म्राजादी, आचळ, अर पागां को राम,
राखेगो मान, कोई समझावो ए।
रणबंका पूछे "क्यूं नी आवो ए ?"

आंगण नी बाजे बीछ्या ए राम,
रमलोभी पूछे—"क्यूं नी आवो ए ?"
कस्या कहूं मुखडा सूं फूटे नी बोल,
चतुर सुजान कोई समझावो ए।।

•

बोलियां को ओलमो हिन्दी नँऽ

सूनां, रूपां, मोत्यां तन शणगार ल्यो,
पण मन में मुळकावो फूल गुलाब को,
नित नित लड़ भड़ लूमे गहणां रूप पऽ
पर कदी क' तो राखो मान गुलाब को ।।

खुद तो चाहो जतनो दरपण देखल्यो,
दूजा निरखेगा क न' या भी देखल्यो,
चाहो ज्यूं गरबो निखराळी चाल पऽ,
निरखे सारो बाग ऊ फूल गुलाब को । पण....

ये गहणा—चुड़ला, चूंपा, नग, नेवरी,
जाणे सबद कठोर तपस्या देवरी,
कदीक हांसो, बोलो प्रीत जतावो तो,
सीखो आंगण मुळक' फूल गुलाब को ।। पण •

चाहो जतनां केशां मोती सारल्यो,
तारां—बरणो जाळ शीश प धारल्यो,
दूणो जादू आजाव'गो रूप मंऽ
ज्यो जूड़ा मं' टांको फूल गुलाब को ।। पण....

महलां राज कचेर्‌यां बोल गुमान का,
मीठा बोल पणघटा खेत खलाण का,

यां सू वात करो तो चूमो धूळ नैंऽ (बैठा पोळ मंऽ)
फेरू बोलो झड़ज्या फूल गुलाब को ।। पण ...

पीड़ा द्यो छो पीड़ा का उपचार मंऽ
मुळकावो मटकावो उळझायों हार मंऽ
ये हीरां का हार, जड़ाऊ बाजरी,
पहरो पण मत भूलों बाग गुलाब को ।। पण —

हिंदी के आंगणिये मुंकेरांणो जड़द्यो,
थांवा, ताक झरोखा अर जाळी घड़द्यो,
चाहो जतनो बडो बणावो रावळो,
पण बीचा में राखो तुलसी थांवळो ।
पण मन में मुळकावो फूल गुलाब को ।
पण कैदीक तो राखो मान गुलाब को ।।

•

गीत

सांझे जळायो दिवलो—वायरो बुझाद्यो ए,
आखी रात अंधियारो रहसी के ?

राग छेड़तां ई कोई तार तोड़ दीनो ए,
सदां मूंन अकतारो रहसी के ?

बाबुल क' आंगण' म्हूं गुड़ियां सूं खेली ए,
टूट्योड़ी गुड़ियां नं' एर-एर मेली ए,
पर घर पियर तज आस लेर आई ए,
नुई गुडियां सूं रमसी कद' म्हारी जाई ए,
भाई क' पाळणें' म्हूं बालपणें' खेली ओ,
सूनो आंगण म्हारो रहसी के ? आखी रात....

भायल्यां पहर' म्हारी पचरंग पूमचा,
हंदळोटे' हाल' वां का बाजूबंद लूम का,
म्हारो शणगार सदां पेटी में रह'गो के ?
कूंपलिया को काजळ आंसू में' वह'गो के,
मणग्यारा सूं लियो लड़ लड़ हिंगळू,
गोटो अणगुंथवायो रहसी के ? आखी रात....

स्वागण्या को टोळ पूज' रोगी गणगौर ए,
जाण' कद ईसर बर तोड गया डोर—ए,
हथळेव' दाग म्हार' मेंहदी को लाग्यो ए,

ऐ र' दूणो नवज बदाणो छ' दकाल गंगोल्या !
बैरी आग्यो रे ।।

बैठ्यो बैठ्यो पोळ पटेलाई मत साध' रऽ
मां को दूध मून सूं, पसीनां सूं चुका द' रऽ
ऐ र' थारी बाट न्हाळ' सेल ए रणखेत गंगोल्या !
बैरी आग्यो रे ।।

बैरी की चिड्यां थारी भाग्वाई खाव' रेऽ
गोरूण सम्हाल पूंचो पौचो मत राख' रऽ
ऐ र' भारत मां को मोतो मांग ई रुखाळ गंगोल्या !
बैरी आग्यो रे ।।

धरती क' नेग' हो छ थारी जिन्दगानी रऽ
रोक' मत हाथ, होजा ओढरदानी रऽ
ऐ र' म्हारी आबरू रो फेर धन हो ज्याणो गंगोल्या !
बैरी आग्यो रे ।।

धोराणी को हिमळ बचाणो हो तो जाग रऽ
थारी नारी बहणा को बचाणो हो तो जाग रऽ
(ऐ र' थारी मायड़ को दूध मत लजाज गंगोल्या !)
ऐ र' बेला आई छ अमारो उजाळ गंगोल्या !
बैरी आग्यो रे ।।

पधरावणी

नेहरू जी पधार्‌या पांवणां म्हांन' प्यारा लाग' सा !
प्यारा लाग' सा—घणां घणा वा'ला लाग' सा !
जुग जुग जीवो ऊमर म्हांकी थांई लाग' सा !!

नहरां न' चौक पुराय द्‌यो, चांवल पग धोव' सा
बधा को छ' पग पांवड़ो पधरावण होव' स—
नेहरू जी पधार्‌या पांवणां म्हांन' प्यारा लाग' सा !!

चाम्बल छी मद वावळी परवत में' सोई सा,
नेहरू जी को परताप खेतां की चाकर होई सा—
नेहरू जी पधार्‌या पावणां म्हांन प्यारा लाग' सा ।।

मान वढायो महनतां को हिवड़ा नं' दीनों राग,
कोंपळ को दे हीगळू धरती नं' दीनों सुहाग सा—
नेहरू जी पधार्‌या पावणां म्हांन प्यारा लाग' सा ।।

प्यारा लाग' सा घणां घणां व'ला लाग' सा ।
जुग जुग जीवो ऊमर म्हांकी थांई लाग' सा ।। *

* कोटा सिंचाई बांध का उद्‌घाटन करने के लिए आये हुए पं० नेहरू के स्वागत में गाया गया गीत ।

छोटा छोटा टावर देखो हूंसा काम कर' र:
पाचां की भड़ जीं क' ऊ जम सूं भी नहीं डर' र:
परवत न काट—समेंदर न' पाट—भाई मंगळ गान करां ॥

नंद्यां तळाव सूं नहरां का धोराल्या लहरा
करां सिंचाई, हर्यो धूमचो धरती न' पहरा
निवजे'र अन्न—हरसे'र मन्न—मोती खनिहाण भरां।
क' अब तो चेतो भान करां।

(२)

देस पंछीड़ा र'–भारत नं'–भारत नं' भगीरथ नेहरू पायो र:
चाम्बल प' बांध बंधायो र:
बंधा को धरांड़ खुलायो र:
परबत सूं माळ मं' लायो र:
सम्पत को रेलो आयो र:
उन्नति को सेतो पायो र—करसा ओ र:।

सुण अलबेला र'–आगी–क' आंगण मं' ही गंगा आई र:
मरदां की मेहनत मुळकाई र:
चाम्बल न पाणत भरवाई र:
नहरां की गूंजी सहनाई र:
धरती की सौरभ महकाई र:
मुखड़ा सूं मरदमी परगाई र'—अलबेला र: !!

भई मतवाला र'–पौरस नो–पौरस की सेना मं' कचोड़ा लाग'गी।
घर घर म उजाळो लाग'गी,
अमाण की छोटी भाग'गी,

दहेंग्यां जे मचोळां खाव'गी,
मोत्यां की साख उगाव'गी,
हरियाळी हरख मनाव'गी–मरदाना रऽ!!

अर' अन्नदाता र'–पूरब सूं–पूरब सूं पच्छम तांई पाणी पाव'गा।
पड़ता में पुसब उगावं'गां,
गारा म' सोनो नवजावं'गा,
क्यारां मं' केसर बावं'गा,
चोमरू' बाग लगावं'गा,
बरसा को भूख भगावं'गां, अन्नदाता रऽ!

देख राम जो र'–तकदीरां मुट्ठ्यां मं' तो महांक' आगी रऽ
चाम्वल अब चाकर होगी रऽ
हळ की चऊ गद्गद् होगी रऽ
झोपड्यां मं' रघसघ होगी रऽ
गोरड़ी डेगड़' गा' री' रऽ
सांच्या ई आजादी आ' री' र'–आजादी रऽ॥

देख पछीड़ा र'...............

काजली-तीज

भोळी बाईसा का प्यारा वीर, तीज प' मत आज्यो
सए लियां छ' काजली तीज, तीज प' मत आज्यो-
सायबा मत आज्यो।

म्हन' याद छ' हूंदलोटा पलग्या,
गीतां का बांध बलम खुलग्या,
उर उलझी सतरंग डोर,
पएघटा लटका कर रिया मोर,
मिटी नं, पए माता की पीड़,
खीचर्यो उतर मं' कोई चीर,
हिवाळो खाली करवाज्यो–सायबा मत आज्यो ॥

धरती नं चीर धानी ओढ्यो,
मेहो म्हारा आगए ई' धोग्यो,
म्हूं सुएरो' मेघ मल्हार,
हाय ! पए दमना सब शएगार,
चाटर्यो हरियाळी बारूद,
माय को मती लजाज्यो दूध,
स्वाग को चुड़लो उजळाज्यो–सायबा मत आज्यं

गजरा मं' याद हथकड़्यां की,
बींदी मं' टेर बरछड़्यां की,

वे' हंस हंस जीत' हेत,
छोड्या जनवासा की सेज,
सूळी में' फांसी की याद,
है म्हारा भगतसिंह आजाद,-
शहीदां की गेल्यां जाज्यो–सायबा मत आज्यो ॥

आजादी का सरदार सजग,
सीमा का पहरादार अडग,
नभ नीड' परबत शिखरां प'
म्हारां कवल बरफ की डगरां प'
म्हूं में' छोड्या सारा चैन,
गैल में' ब'ठी बछा 'र नैन,
पाग को मान बचा लाज्यो–सायबा मत आज्यो ।।

म्हारी ऊंठी गुम री' तीज पिया,
जठी अजगर का फण फैल रिया,
हेर लाज्यो मिलवा की वार,
नही तो ले मंनाण कटार,
चिता की झाळा चढ जाऊंगी,
तीज को कोल नभा जाऊंगी,
राख को टीको कर जाज्यो–सायबा मत आज्यो ! !

भोळी बाईसा का प्यारा वीर तीज प' मत आज्यो,
रण लिया छ' काजळी तीज–तीज प' मत आज्यो !
सायबा मत आज्यो !

बीड़ो उठाओ

लाल किला मं' बीड़ो फिरे छ' कोई उठाओ रे!
देश की धूळ छ' रोळी उठो रे! टीको लगाओ रे!!
उठो रे बीड़ो उठाओ रे!!

वारूदाँ भेळी रेत जगावे
केशर फूल्या खेत बुलावे
या छ' पछाण जुभाराँ की
वे दूध पिवे पण खून चुकावे
माँग' सबूत जवानी, मूंछ्याँ पर पाण लगाओ रे ।। उठो रे—

मंदरियो हुँकार उठ्यो रे
कांकड़ हेला मार उठ्यो रे
'एक बराबर होवे सवालख'
गुरुद्वारो दलकार उठ्यो रे,
चूको मती चोहाण, कवाण प'बाण चढ़ाओ रे ।। उठो रे—

खेत कह' करशाण उठो रे
बाघ कमर कमठाण उठो रे
फूलां की कोमळ पंखड़ियाँओ!
आज बणो चट्टाण उठो रे,
देश क' खातर खून पसीनां को यज्ञ रचावो रे ।। उठो रे—

माया सूं मोह लगावे जे पापी,
धन में मन रमावे जे पापी,
साँचा सपूत अंगीरा सूं खेले
फूलां की सेज बिछावे जे पापी,
गळी गळी बलिदाना का मंगळ मेळा मनाओ रे ।। उठो रे....

कोई कळी मुरझा नहिं जावे,
छांटो तिरंगा प' आ नहिं जावे,
जागता रीज्यो कोई भी देश का
पात क' हाथ लगा नहिं पावे,
सीमा प' शेलड़ा गाडो रे, अंगद पाव जमावो रे ।। उठो रे....

दे दे अशीष, विदा देरी जामण,
दोधारो बाध खनादे री कामण,
शूरा चढ़े रणखेतां जरासो
आज गगाजळ लारी कलालण,
थांको भूगोल ताके ऊँई थाँ इतिहास पढ़ाओ रे ।।
उठो रे बीडो उठाओ रे ।।

छालर

ए म्हारी छालर गाय !
काळ पड़' कळजुग की माया,
तू सतजुग की घाय
कान्ह कुँवर थँनं' दूध पिवायो
तू भूखां मर जाए ।। ऐ म्हारी छालर गाय!

नारद पूछी," बोझ धरा को—
बोलो कुण झेल'गो ?"
सिंह नट्या पण तू बोली-" म्हारो
वांठो सुत झेल'गो ।"
जे धरती थँनं' हरी करी वा ही थारा कुळ न खाए ।। ए...

राम दियो थँनं' वचन, धरा
प' नागरबेल चरो रे"
नागरबेल छोड़ नी दीखे,
झूपड़ियां छपरो ए ?
दो'बाहाळा खुद छोड़ चल्या थने पगल्यां शीश नवाए ।। ए...

यो मरुधर ज्यांकी जनम भोमक्या
बळद्या रूप रूपाळा
अन्न की खोजां बाळद चाली
सूनो करग्या साळा
अम्बर नटताई थारो बोझो धरती खुद नट जाए ।। ए...

हालरो

तू सोजा म्हारा लाल हालर द्यूं ।
हालर द्यूं-थं' नं' हूलर द्यूं ॥ सोजा...

जाग'गो तो भूख सताय'गी ऐ लाल,
सपनं' मल'गा थं नं दूधां भाती थाल,
आँसूड़ां का मोती भर गागर द्यूं ॥ सोजा...

मचल्यो न' हूँदळोट' रेशम की डोर,
गोदड़ां की गोदी थं नं काळज्या की कोर,
म्हां सूं म्हूं चांदणी-सी झालर द्यूं ॥ सोजा...

कुण दे मचोळा थं नं' कुण गाव' गीत,
कोई भी न' दुखिया का दांईं दड़ मीत,
थपक्या को हेत लुटा अर द्यूं ॥ सोजा...

पाड़ा ए पड़ोस थं नं' रोता देव' गाळ,
सुण सुण हिवड़ा मं' लाग' म्हार' साल,
रूस'गो तो पुचकारी मन भर द्यूं ॥ सोजा...

सपना के घर जा तू पाजे सुख लाल,
जागता मं' कोरी म्हारी पलकां की ढाल
दुख माथ' बोझ हो तो उतार ल्यूं ॥ सोजा...

इन्दरपुरी का सुख निंदरा क' देस,
धरती तो दुखियां क' लेख' परदेस,
मनख जमारो लागे भार ज्यूं ॥ सोजा...

हालरो

तू सोजा म्हारा लाल हालर द्यूं ।
हालर द्यूं-थँ' नँ' हूलर द्यूं ।। सोजा...

जाग'गो तो भूख सताव'गी ऐ लाल,
सपनँ' मल'गा थँ नँ दूधाँ भाती थाल,
आँसूड़ाँ का मोती भर गागर द्यूं ।। सोजा...

मचल्यो न' हूँदळोट' रेशम की डोर,
गोदड़ाँ की गोदी थँ नँ काळज्या की कोर,
म्हाँ सूँ म्हूँ चाँदणी-सी झालर द्यूं ।। सोजा...

कुण दे मचोळा थं नँ' कुण गाव' गीत,
कोई भी न' दुखिया का दाँई दड़ मीत,
धपक्या को हेत लुटा अर द्यूं ।। सोजा...

पाड़ा ए पड़ोस थँ नँ' रोता देव' गाळ,
सुण सुण हिवडा मँ' लाग' म्हार' साल,
रूस'गो तो पुचकारी मन भर द्यूं ।। सोजा...

सपना के घर जा तू पाजे सुख लाल,
जागता मं' कोरी म्हारी पलकां की ढाल
दुख माथ' बोझ हो तो उतार ल्यूँ ।। सोजा...

इन्दरपुरी का सुरा निंदरा क' देस,
धरती तो दुखियां क' लेख' परदेस,
मनख जमारो लागे भार ज्यूं ।। सोजा...

दी ऐड़, उठ्यो साजणो, झटको जदी लगाम,
घोड़ो न खाई ठोकरां होव'गो बुरो काम।

पण गूण अर कुगूण सभी दबग्या रोस मंऽ
यूं बीत गई रात ऊ गटक्यो दो फोग मंऽ।

तड़क' बसन्त पंचमी, सूरज लियां गुलाल
फेंक' छो; पण जुझार क' मन मं' घणो मलाल।

पूग्यो न गात मं' यूँ ही तलवार रह गई,
मुळकातो गयो महला हिये आग रह गई।

सुणता ही राणी दौड़ती पावां मं' आ पड़ी,
राजा का हृद्या पांव नजर भी उड़ी उड़ी।

समझी नहीं भोळी सती पूजा को थाळ ले,
करवा ज्यो लागी आरती बढ़ग्यो ज्यूं टाळ दे।

पूछी—"कहो हरदौल का भर घाव गया नंऽ
तलवार म्हारी दे'र थां राजी तो हुया नंऽ?"

भोळी सी हंसी ले'र यूं राणी नं' कही छी—
"ईं दोप सूं ही ओडछा की नाक रही छी।

तलवार आपकी म्हूंनं' दी दोप हो गयो,
लाला नं' मान राखल्यो संतोप हो गयो।

शाही नजर को काकरो, तलवार को धणी,
परजा की पीड़ काळजे हरदौल क' घणी।

हरदौल ईं प्राणां सूं भी प्यारो छ' ओड़छो,
म्हार' भी आप दोई कळेजा की कोर छो॥'

ईं रोप मं' या बात आहुती सी बण गई,
बुद्धि नं' साथ छोड द्यो जद आंख तण गई।

दी ऐड़, उठ्यो ताजणो, मटको जदो लगाम,
घोडी न गाई ठोकरां होव'गो बुरो काम।

पग गूण अर कुगूण सभी दबग्या रोस मंऽ
यूं बीत गई रात ऊ भटक्यो दो कोम मंऽ।

तड़क' वसन्त पंचमी, सूरज लियां गुलाल
फेंक' छो; पण जुभार क' मन मं' घणो मलाल।

पूग्यो न रात मं' यूं ही तलवार रह गई,
मुळकातो गयो महलां हिये आग रह गई।

सुणतां ही राणी दौडती पावां मं' आ पड़ी,
राजा का हृद्या पाँव नजर भी उड़ी उड़ी।

समभी नहीं भोळी सती पूजा को थाळ ले,
करवा ज्यो लागी आरती वढग्यो ज्यूं टाळ दे।

पूछी—"कहो हरदौल का भर घाव गया नऽ
तलवार म्हारी दे'र थां राजी तो हुया नंऽ?"
भोळी सी हसी ले'र यूं राणी नं' कही छी—
"ई दोप सूं ही ओड़छा की नाक रही छी।
तलवार आपकी म्हंनं' दी दोप हो गयो,
लाला नं' मान राखल्यो संतोष हो गयो।
शाही नजर को काकरो, तलवार को धणी,
परजा की पीड़ काळजे हरदौल क' घणी।
हरदौल ई प्राणां म' [illegible] प्यारो छ' ओड़छो,
म्हार' भी [illegible] छो॥'
[illegible] गई,
[illegible] गई।

की पीड़ या देखो न जा सकऽ
पाऊंगो मनवा मं ना'सकऽ।"

हतभागणी मां तो बणी रही,
री आंख मं' कंकर कणी रही।

ई सीस प'आशीस धरी छी,
वघात की तैयारी करी छी।

प्रेम प' सुहाग नं' करी,
जाच तो सीता की नं' करी।

राम की कमजोरी आ गई,
जाई नाक-लाज खा गई।

मां बना व्यभिचारिणी नारी।"

वढतो ही जार्‌यो राज म' परभाव छ' ऊँको,
कांटो छ' म्हारो गेल को विष आग म' फूं'को ।

सत को छ परीक्षा करो विश्वास सू पूरी,
राणी या थां की मौत सूं रह ज्यागी अधूरी ।'

घरण की सी चोट लागगी राणी का शीश पऽ
गश खा'र जा पड़ी; गयो जुझार खीझ कऽ ।

कांसा की वेर हो गई हरदौल आ गयो
सुणतां ही गळ' रोज भी राणी क' आगयो ।

बांकी सी पाग सिह जस्यो गर्व भाल पऽ
गजराज भी शरमा गयो मतवाळी चाल पऽ ।

पेळा सा अंगरखा प' लियां छींटा कसूमल,
नैणां मं' छो भोळापणो बाजू मं' अतुळ बल ।

"भाभी बसन्ती खीर खिलाद्‌यो मचळ पड्‌यो,
राणी को पांव कांपतो बाहर निकळ पड्‌यो ।

आग' बढ्‌यो हरदौल झुक्यो पांव छू लिया,
राणी को बोल कांपग्यों, 'म्हूं खीर छूं लियां ।'
मोत्यां ज्यूं रळक जा पड्‌या जद खीर प' आंसू,
हरदौल चोंकग्यो हुई अणहोणी क्यूं थांसूं ?
भाभी का इशारा प' धराई उथेल द्यूं,
ब्रह्माण्ड नगळ जाऊं म्हूं पाछो उगेल द्यूं ।
भाभी का मां का भेद बतायां नहीं बणऽ
सीता क' लेख' आज लखन का धनुष तणऽ ।
जाणी न म्हंन' मां की गोद होव' कांईं छऽ ।
भाभी न' छोड़ और को विश्वास कांईं छऽ ।

घणी छूँयाँ की पीड़ या देखी न जा सकऽ
म्हैं भी न जाए पाऊंगो मलवा मं ना'सकऽ।"

"हे राम! म्हैं हतभागणी माँ तो बणी रही,
पण वहम भरी आग मं' कंकर घणी रही।

जीं हाथ सूँ ईं सीस प'आसीस धरी छी,
ऊं सूँ ही पुत्रघात की तैयारी करी छी।

शंका भी पुत्र प्रेम प' सुहाग न' करी,
ईं सूँ भी कठिन जांच तो सीता की नं' करी।

दुनिया म' फेर राम की कमजोरी आ गई,
अबला का कळेजाई साथ–लाज मा गई।

पण माँ ईं ने दुनिया अबा व्यभिचारिणी नारी।
सूं बड़'र और पाप की रासी न' बणारी।

हरदौल वणी कहयो–"परीक्षा नहीं पूरी
भाभी का बाकी मोल सूँ रह जावगी अधूरी

कोहराम सो माच्यो धरा वीरान हो गई,
जाणै' बसन्त की श्री विष खा'र सो गई।

खुद मौत परेशान छी क्यूं आ गयो हरदौल
राणी कह' छी "लाल तू मूंढ' तो म्हेंसूं बोल।"
फूलां सा हाट खोलग्या महादेव सो'गयो,
इन्सान भी बलिदान सूं भगवान हो गयो—

भगवान हो गयो ॥

•

फाटग्यो आडावळा-सो हीवड़ा परताप को,
झरण फूट्यो आँमुवाँ को हिचकियाँ नं'दावतो।
रळक आंसू कह रह्या छा मूँछ की मरोड़ सूँ,
नरम पड़जा आण को बाँको अरी हठ छोड़ तू।

होट कटग्या पण न राणी का दब्या व'सूकड़ा,
लपट लूमी "लाल म्हारा काळज्या का टूकड़ा।"
मर गया राणा'र परगट बाप होग्यो चीख दे,
"कोस ल' मेवाड़ अकबर एक रोटी भीख दे।"
गुंजगी घाटी थरहरो खा गई धरती जदी,
वीरता परताप की रोती न दीखी यूं कदी।

डूबतो सो जाण सूरज—बंस सूरज कांपग्यो,
अब इळा की लाज गी, इकलिंग स्वामी झांकज्यो।

टूटग्यो आडावळा का मोड़ यो परताप-सी,
आंथग्यो एकलिंग जी का जोड़ को परताप-सी।
तण गयो तो रुद्र को ई रूप छो परताप-सी,
रा पड्यो तो करुण-रस की आंख छो परताप-सी।

सांस म' तूफान सो छो आँसुवाँ मँ' आगसी,
प्हाड़ सू अब प्हाड़ ज्यूं सर फोड़र्यो परताप-सी।

झाँई सी जद घाटियां मँ' गुंजगी "ओ वापजी",
एक दीख्यो भील बाळक हेर र्यो छो वाप जो।

रक्त चपचप चो रह्यो छो घाव साम'साम छो,
हाथ हिवड़' छो'र, होटा 'वापजी' को नाम छो।

झपट राणा न लगायो हिवड' कर थामल्यो,
अटक बोल्या "भील छूं" अरफेर "दद्दो" नामल्यो।

जीव की आसा न राखी काम कांई बोलतो,
मळक बोल्यो "बापजी ई जीव सूं अणमोल छो।
तीन दन सूं आप आया टापर्या भीलांन की,
सोचर्या सब भूग लागी होव'गी जोरांन की।
भट्ट रोटी लेर म्हैं भाग्यो यूं म्हारा मोर की,
गेल मं' बेरी नं दीनी ताक मामां तीर की।"
रक्त भीजी एक रोटी कांपता हाथांन सूं,
भेंट राणा क' करी नीच' नमी नजरांन सूं।
"जीमल्यो बप्पा, क'भूखा तो लड्यो न' जाव'गो,
न लड्या तो दाग यो मेवाड भी हो जाव'गो,
राखल्यो मरजाद ईं आडावळा की बापजी
राखल्यो आजाद म्हां की टापर्याईं दापजी।"
पड़'र इतो गिर पड़्यो धर बीण राणां क' पगां,

यूं उमड़ घुमड़ सावण आतो,
मन मन में हूंस जगाव'छो,
ई मौसम में ही अकबर भी,
मीना बजार लगवाव' छो ॥

हो जातो पुरुषां को आवो-
अर जावो बंद बगीचा मंऽ
घावरी छुटी मोडो ने दे-
मोहरां-फाटकां दोनां मंऽ ॥

एक साल ऊठी मीना बजार,
ऊठी अकबर, बेगम, राणी।
बस गई सहेली की आई—
कवि पृथ्वीराज की बीराणी ॥

दीठ पड़ गी भागरदी सारी
बोली—"सब साथी सहेली थऽ
राठोड़ कँवर जी थारं गया
ल्यो था भी चालो [illegible] ॥"

"[illegible]" [illegible]
बोली [illegible]
[illegible] बोली "[illegible]
[illegible] ॥"

जाकर देख्यो मीना बजार
सँचन्दण मचरयो छो सारऽ
रंगीन रोशनो कह री छी–
'रात का अंधेरा तू जा रऽ'॥

चकरागी या भोळी माळी—
रजपूताण इकसार बजारां मंऽ
पापी की काळी आंख पड़ी,
ज्यों छुगी महल का बारा मंऽ ॥

दौड़ी एक दासी महलां सूं
बोली-"क्यूं आप कठै डुलग्या ?
सब राण्यां उँठी जा पूगी
व' शीशमहल का पट खुलग्या ॥

सब भीतर जाकर बैठ गई
पण आप उठी न' न'पाया
म्हूं हेर फरी च्यारूँ आडी
अर आप नजर मं'अब आया ।"
यूं बातां करती बहकाती
वा भूलभुलैयां मं' लेगी
निष्पाप दूध की धारा ईं
वा कपटण भंगराती लेगी ॥

राणी सहमी सी चाल' छी, धीरां धीरां डरती डरती,
ज्यूं हरणी जाव' जाळी की, मन मं' शंका करती करती ॥

महलां की चकफेरी मं' गी तो नीच खड़ो साम' दीख्यो,
ऊंडो ऊंडो सो हांस' छो ऊ कामी मन्शा मं' भीज्यो ॥

"मीना बजार में' पुरुषां को
आवो जावो चालू क्यूं छः ?
यो सीधो आर्यो छ क मूं
कह द' झांक' सामो क्यूं छः ?"
पण पाछ' कोई न' बोली
मूंढ कर झांकी आ बहम गयो।
"बांदी दे गई दगो दुर्गा।

रक्षा कर नहि तो धर्म गयो।"
थामी मुन्ना को हाथ पड्यो,
एक बार मुकुट प' फिर आगः
हो गई न्यारी टेक, जद्यां
पग नीच' मूं धरती भागः॥

ऊं दन जाणी प' ओरत की
दुनिया म' कतनी ताकत छः
'पद्मा धत्री अबला ह
माथा प उठी आफत छः॥

आगू की ताकत [illegible]
इज्जत को बोझ उठायो है,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ज्यो ई दन मेल' चैंप री छो,
झट हाथ कटारी प' पूग्यो,
दी माथ पाणी प' धचाकत
पट चौट कटारी को टूट्यो ॥

छाती प' तो गदरया काळ
ज्यूं लपलप जीभ हिलाय' छो
"कामी कुत्ता की ताकत पऽ
सती को गरब टगाय'छो ॥"

सिहणी गर्जना कर बोली—
"क्यूं नागण थें'नें ठुकराई ?
अणदागल असवारां की बेटी–
की देख खून की गरमाई।

हो गयो अन्त हिम्मत को-"मां !
गऊ हूँ" कर जोड्यां कही नीच
राजां का राजा न अवला सूं
ऊं दन मांगी प्राण भीख ॥

"गऊ?" धत्तजा ! माफ करूयो कद सिंह तुणकल्यां खाव'छऽ
ओछापण ओछां को ठैको, असली न उठै चत्त लाव छऽ ॥
पण भूल कदी मीना वजार लगवावा की फिर मत करजे,
तू जस्यां म्हैं ई मां कहूयो छऽ हर परनारी ईं मां कहजे।"
अधरां में अटक्यो जीव, फिर्यो. पत्थर ज्यूं शीश हिल्यो 'हां' मंऽ
फिर चरणां मं'माथो धरद्यो टप टप आंसू झरग्या वा मंऽ ॥
गदगद धरती माता होगी सब देवि देवता हरख उठ्यां
सत्ती का पगल्या धोवाई बादळा रमांझम बरस उठ्या
बरस उठया ॥

पुरुष : बादळां क' गोद' म्हारो म्हैलो दन रात,
नारी : तीर थारा बिजळ्यां सूँ कर' नत बात,
कर' याद तारा सू पछाण—भील राजो-

नारी : पाट्यां की अंधेरी ब'ट्यो म्हाळ' म्हारी बाट,
पुरुष : झरणां की लेरां गाव' ता ता थिन थाट,
बायरा में' गूंज' थारा गान—भील राणी-

पुरुष : ओढूँ र' बदन प' मरदमी को तेज,
नारी : साती मेळी डूंगर्यां आणन्दकारी सेज,
शम्भू पारवती को मिलाण—भील राजो-

नारी : धनुष तण' र' म्हारा भंवरा नं' देस,
पुरुष : सीस' म्हारा तीर थारा नजरां की टेक,
म्हारो बळ थारी मुसकान—भील राणी-

पुरुष : म्हूँ शेर को साथीड़ो बळवान भीलराजो डूंगर को
नारी : म्हूँ थारी लेरां छावळी समान—भील राणी डूंगर की ।

पुरुष : थार' घूंघटियो चूनर को,
थार' कोड्यां की खुगाळी—बड़गांव की वणज्यारी ॥

पुरुष : चांदी सी पांडू लायो,
स्त्री : गीता म' जादू लायो,
अर' लाखां को बोपारी—बड़गांव को वणज्यारो ॥

स्त्री : ल्यो मोत्या की लड़ सांची,
पुरुष : थारी मँहदी घणी राची,
तू नखराळी बोपारण—बड़गांव की वणज्यारी ॥

पुरुष : यो चारस को सो जोड़ो,
स्त्री : छोड़ो जी पल्लो छोड़ो,
तू छणगाळो छ' वालम—बड़गांव को वणज्यारो ॥

स्त्री : थँ' नँ' कब तक कोई वरजऽ
पुरुष : थँ नँ' चांद सूरज भी नरखऽ
म्हूँ दिवलो तू दीवाळी बड़गांव की वणज्यारी ॥

दोनों : ब'ळां की बाळद लायो बड़गांव को वणज्यारो
शणगारी डावो लाई बड़गांव की वणज्यारी ॥

अणबाँच्या आँखर

हाड़ौती गीतों का संकलन

रघुराजसिंह हाडा

अर्चना प्रकाशन
अजमेर १९७०